विजय के लिए इंतज़ार नहीं इंतज़ाम करें...

जब हम सुनते हैं कि परिस्थिति पर स्वस्थिति से विजय पायें, तो परिस्थिति पराई माना बाह्य है, स्वस्थिति अपनी है। लेकिन फिर सवाल उठता है कि परिस्थिति को स्वस्थिति से जीतें कैसे? जब परिस्थिति आती है तभी तो हमारी स्थिति भी डांवाडोल हो जाती है। तब भला कैसे संभव है कि हम जीत जायेंगे, विजय प्राप्त कर लेंगे! उसका कारण क्या है ये जानना ज़रूरी है। प्रैक्टिकल में जब परिस्थिति आती है तब हमारी स्वस्थिति टिकती नहीं है। तो परिस्थिति माना जैसे कि वर्षा ऋतु आती, ठंडी-गर्मी आती, वसंत ऋतु भी आती, ये परिस्थिति है। मौसम तो बदलेंगे ही बदलेंगे लेकिन इन सब ऋतुओं में मुझे उसका प्रबंधन, इंतज़ाम पहले से ही करना होगा। वर्षा ऋतु आएगी तो क्या-क्या आवश्यकता होगी, रेन कोट चाहिए, कैसे बाहर जाना-आना है उसका प्रबंधन करते हैं ना। छाते का इंतज़ाम करते हैं ना। कहीं हमारी छत में लीकेज न हो उसको ठीक करते हैं ना। अगर हमने उसका ठीक से प्रबंधन नहीं किया, इंतज़ाम नहीं किया और इंतज़ार ही करते रहे तो नतीजा क्या होगा! ठंड लग जायेगी, सर्दी-जुकाम पकड़ लेगा, अगर बारिश है तो कहीं आने-जाने में हम भीग जायेंगे, तर-बतर हो जायेंगे। इंतज़ाम ठीक से किया तो ठीक है लेकिन इंतज़ार ही करते रहे कि बारिश आयेगी तो कर लेंगे, तो परिणाम क्या होगा!

तब बाबा ने कहा है कि इंतज़ाम करो, इंतज़ार नहीं। परिस्थितियां आयेंगी, उसका इंतज़ाम करो। आप सारी मुरलियां(परमात्म महावाक्य) पढ़ कर देख लो, बाबा ने हर परिस्थिति के बारे में बताया है और उसका कैसे इंतज़ाम करें वो भी बताया है। कोई ऐसी परिस्थिति नहीं जिसका उपाय बाबा ने मुरलियों में न बताया हो।

जैसे फौजियों के लिए कहानी है ना कि दुश्मन की फौज वहां तक आ गई है..., कहते हैं आने दो अभी तो बहुत दूर है...। तो नतीजा उसका क्या हुआ! कबूतर देखता है कि बिल्ली आ रही है, वो उड़ने के बजाय अपनी आँख बंद कर लेता है कि बिल्ली उसे देख न पाये और बिल्ली जब आकर उसकी गर्दन पकड़ लेती है तब उसको ख्याल आता है कि मेरी गर्दन तो उसके मुँह में है, वो तो आ गई। तो उस वक्त उसका हाल क्या होगा! ऐसे ही हम भी कहते रहते हैं कि बाबा ने सब बताया है कि परिस्थितियां तो आयेंगी ही, लेकिन परिस्थितियों का इंतज़ाम नहीं करते, तो उसका नतीजा क्या होगा, ये हमें प्रभावित करेंगी ही, समय आने पर नहीं होगा, हम असफल हो जायेंगे, हमारी हार हो जायेगी, स्वस्थिति डगमग हो जायेगी, अचल-अडोल नहीं रह सकेंगे, हम विचलित हो जायेंगे। तो पहले से ही इंतज़ाम करो।

हम जो मुरलियां सुनते हैं, वो हमारे अंतर में क्या परिवर्तन ला रही है उसको समझो। दूसरा, ये देखो कि कौन-सी परिस्थिति के लिए बाबा ने कौन-सा इंतज़ाम करने के लिए बताया है, वो करो। बाबा ने बताया है कि इस परिस्थिति के लिए ये बातें ध्यान में रखनी हैं, ये इंतज़ाम करना है। मुरलियां सिर्फ सुनने के लिए नहीं, लेकिन जो बाबा कह रहे हैं, उसे उसी तरह से सुनेंगे, समझेंगे तब समय पर हम इंतज़ाम कर पायेंगे और विजयी हो सकेंगे। तब स्वस्थिति से परिस्थितियों पर जीत पायेंगे।

व्यर्थ संकल्प भी असत्यता है जिससे एनर्जी खत्म होती है

बाबा ने एक बार कहा था कम्बाइंड तो हूँ लेकिन समय पर काम में नहीं लेते हैं। मानों मेरे में शक्ति नहीं है लेकिन बाबा तो शक्तिमान है। तो उस समय बाबा की याद आवे। माया भी चतुर है पहले बाबा भुला देगी, अकेला कर देगी फिर वार करेगी। क्यों याद भुल जाती है? दिल सच्ची नहीं है।

सत्यता माना स्वच्छता, कोई भी अच्छी श्रेष्ठ चीज़ होगी तो उसे स्वच्छ स्थान पर ही रखेंगे। हमारे दिल में भी बाबा विराजमान है तो हमारी दिल सच्ची है। नहीं तो ऐसे कहेंगे हमारे दिल में बाबा है लेकिन जब समय आयेगा तो बाबा याद नहीं आयेगा। साथ में रहेगा बाबा लेकिन कम्बाइंड नहीं होगा। तो चेक करो हमारे दिल में कोई बुराई तो नहीं है। बुराई को सत्यता नहीं कहेंगे। जब कोई पेपर आता है तो कम्बाइंड बाबा की शक्ति से पेपर में पास हो जाते हैं। बाबा ने एक बार कहा था कम्बाइंड तो हूँ लेकिन समय पर काम में नहीं लेते हैं। मानों मेरे में शक्ति नहीं है लेकिन बाबा तो शक्तिमान है। तो उस समय बाबा की याद आवे। माया भी चतुर है पहले बाबा भुला देगी, अकेला कर देगी फिर वार करेगी। क्यों याद भुल जाती है? दिल सच्ची नहीं है।

कोई भी बुराई के जो व्यर्थ विचार चलते हैं, संकल्प चलते हैं। आजकल अशुद्ध संकल्प कम आते हैं लेकिन व्यर्थ संकल्प ज़्यादा आते हैं। व्यर्थ संकल्प भी असत्यता है। व्यर्थ संकल्प से एनर्जी बहुत जाती है, टाइम पर दिमाग में टचिंग नहीं आयेगी। क्या करूं, क्या नहीं करूं... यही सोचता रह जाता है। यहाँ से अपने आप मन और बुद्धि को बिल्कुल ही स्वच्छ करके यानी कोई भी बुराई नहीं, ऐसी सत्यता की मूर्त बन करके जायें।

सत्यता में सभी गुण उनके वफादार होंगे। समझो ऐसी कोई बात हमारे सामने आती है और उस समय सहनशक्ति हमको चाहिए तो ऑर्डर करो सहनशक्ति चाहिए और सहनशक्ति आवे। तो इस बात की ट्रायल पहले से ही करना। जिस समय जो शक्ति चाहिए वो शक्ति हमारे सामने हाज़िर होनी चाहिए क्योंकि अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान कहते हो ना!

तो चेक करो व्यर्थ संकल्प के बजाए मैं समर्थ संकल्प करना चाहूँ तो हुआ, या सोचा तो समर्थ संकल्प करने का लेकिन व्यर्थ संकल्प चल जाते हैं। तो सिद्ध है कि अपने ऊपर कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं है। कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पॉवर चाहिए। वो तब होगा जब सत्यता की शक्ति होगी। साथ में ईमानदार भी हो। ईमानदार अर्थात् स्वयं में पहले ईमान, बाबा में ईमान, ड्रामा में ईमान हो यानी फेथ, निश्चय हो। और जो भी बाबा ने खज़ाना दिया है, सर्वशक्तियां, गुण और सबसे बड़े में बड़ा खज़ाना संगमयुग का समय। संगमयुग में हम एक जन्म के भी लास्ट में भी अगर तीव्र पुरूषार्थ करते हैं तो लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट हो सकते हैं। आप भले पीछे आये हो लेकिन आगे जा सकते हो, क्योंकि वरदान है बाबा का। लेकिन जैसे कोई स्टूडेंट लास्ट में आता है तो अटेन्शन से पुरूषार्थ करता है, ईमानदार है, सत्यता की शक्ति है, आज्ञाकारी है तो आप पहले वालों से भी आगे जा सकते हो। लेकिन वरदान को पूरा करने वाले थोड़ा तीव्र पुरूषार्थ करो। बाबा को रेस करके दिखाओ। विजयी रत्नों को बाबा बाहों की माला देता है।

जो कर्म बाबा ने सिखलाया वही मुझे करना है

बाबा ने एक बारी कहा था पहले 5 मिनट याद में बैठो, फिर 10 मिनट बैठो, मजा आने लगेगा फिर एक घंटा बैठने की आदत पड़ जायेगी। अगर कोई कहते याद में बैठने का टाइम नहीं है तो यह भी पाप है। किसको ठगते हैं? बाबा ने कहा हुआ है टीचर को यह नहीं कह सकते ब्लिस करो, पढ़ना तेरा काम है। पढ़ाना मेरा काम है। पढ़ने वाले को ऑटोमेटिक उमंग आता है, फिर औरों को भी वह सुनाने लगता है। जब तक आपस में ज्ञान की लेन-देन न करो तब तक आपस में भी वह प्यार नहीं रहता। हमारा केवल काम का(सेवा का) ही सम्बन्ध नहीं है। जैसे ऑफिस में गये काम किया, वापस आ गये, ड्यूटी पूरी हो गयी। ईश्वरीय परिवार के प्यार के सम्बन्ध की डोर बड़ी मजबूत हो। कोई अपने को माला का दाना कितना भी अच्छा समझे, देखने में भी अच्छा हो, लेकिन स्नेह सूत्र में अगर एक-दो के समीप नहीं आया तो माला में कैसे आयेगा? अगर ईश्वरीय स्नेह के सूत्र में एक-दो के नज़दीक नहीं आया तो कहता रहे मेरा बड़ा अच्छा योग है, मेरी अच्छी सेवा है, वह तो अपने को खुश करता है। परन्तु सच्चा पुरूषार्थी, वैजयन्ती माला में आने वाला ईश्वरीय स्नेह की डोर में बंधा होगा। तो इतना अच्छा दाना बनो जो और भी आपके साथ में रहकर अच्छे बन जायें। ऐसे नहीं अभिमान हो मैं अच्छा हूँ।

निश्चय में विजय है। जो सच्ची भावना से कुछ भी करता है उसे उसी घड़ी उसका बल और फल मिलता है। जो सच्ची भावना से सेवा करता है। जो सेवायें करके दुआयें लेता है, ऐसे सच्चे सेवाधारी के पास माया आ नहीं सकती।

किसी का दुःख दूर करके दुआयें ले लो। तो हर एक अपने को देखे कि मुझे दुआयें मिल रही हैं। बाबा उन दुआओं में अपनी शक्ति भर देता है। अगर माया को समझना हो, मायाजीत बनना हो तो अपने सूक्ष्म संस्कारों पर ध्यान दो। जो आत्मा में मन-बुद्धि संस्कार हैं। मन-बुद्धि में जो श्रेष्ठ विचार हैं, श्रेष्ठ कर्म करने की जो शक्ति है, वो संस्कार अच्छे बना देती है। संस्कार अनुसार नेचर है। देह अभिमान के कारण जो नेचर बन गयी है- उठने की, बोलने की, खाने की, उस नेचर को बाबा ने चेंज किया है। संस्कार अनुसार स्वभाव है। अभी हमारा संस्कार ईश्वरीय सन्तान का बन गया। मायाजीत बनने के लिए सी फादर, फॉलो फादर... इससे बहुत मदद मिलती है। संकल्प में दृढ़ता हो, जो कर्म बाबा ने किया है, जो बाबा को अच्छा लगता है, जो कर्म बाबा ने सिखलाया है, वही कर्म मुझे करना है। देखना है तो बाबा के चेहरे को देखो, बाबा कभी मूंझता नहीं है, कभी मुरझाता नहीं है। आदि से यज्ञ में कितने विघ्न पड़े हैं, लेकिन बाबा हमेशा शान्त रहता था। मुझे बाबा समान आवाज़ से परे रहने की, अन्दर से शान्त रहने की शक्ति धारण करनी है, यह शक्ति ही बुद्धि को ठीक करती है। शान्ति से विघ्न समाप्त हो जाते हैं, जो विघ्न डालने वाले हैं वो अपने आप किनारा कर लेते हैं। आवाज़ में आये तो विघ्न पड़ेगा। विघ्नों को खत्म करने के लिए शान्ति का, योग का बल चाहिए। हमारी स्थिति को ऊंचा बनने में अनेक तरह के विघ्न आते हैं। उसके लिए योगबल चाहिए। जहाँ सेवा अर्थ निमित्त हैं वहाँ विघ्न आते हैं, वहाँ और योगबल चाहिए।

कभी चिन्ता या व्यर्थ चिन्तन में भाग्य को गँवाओं मत। भाग्य विधाता, वरदाता को अपना साथी बनाके रखो। मेरा भाग्य कोई छीन नहीं सकता।

बच्चों की जवाबदारी ज़रूर माँ-बाप के ऊपर है। उनको भी रास्ता दिखाना है। यह है मुक्ति में जाने का रास्ता से रूठा और कहे हमें मुरली अलग दो। लाचारी कारण हो, नहीं आ सकते तो मुरली ले जाओ।

जब सब रस मेरे में भरे होंगे तो एकरस हो जायेंगे...

और यह है नर्क में जाने का रास्ता। अब कहाँ भी जाओ। राह दिखा दो, चिंता छोड़ दो। क्या करें, कैसे करें, इन चिंताओं की चिंता में न रहो। आपका काम है उनको उस एज तक पढ़ाना, उस कर्मबन्धन को निभाना- यह है ड्यूटी। फिर जैसी उनकी तकदीर।

जहाँ तक हो सके जब दोनों ज्ञान में चलते हों तो हमेशा समझो हम दो नहीं लेकिन 10 हैं। योग का वातावरण ज़रूर बनाओ। 3 पैर पृथ्वी में आसन बिछाकर योग में ज़रूर बैठो। पीसफुल रहो। बाबा ने जो याद की ट्राफिक दी है उसका जितना हो सके पालन करो। जो भी भोजन बने उसका नियम अनुसार बाबा को भोग ज़रूर लगाओ। अगर ज्वाइंट फैमिली है, भोजन का भोग नहीं लगा सकते तो फल का लगा दो। दो मिनट भी याद में बैठकर भोग लगाने से बच्चों में भी वह आदत पड़ेगी। वातावरण शुद्ध होगा।

अगर कोई रोज़ मुरली सुनने किसी कारण से नहीं जा सकते तो दिल में यह दृढ़ता अवश्य हो कि जब तक ज्ञान डांस नहीं की है तब तक भोजन नहीं खाना है। मुरली ज़रूर पढ़नी है। मुरली कोई मैगजीन नहीं। ऐसे नहीं मैगजीन पढ़ ली बस। ऐसे भी नहीं ब्राह्मणी आप सबका हक है। अपने टाइम पर ज़रूर पढ़ो। इन्टरनेशनल योग में भी अवश्य भाग लो। उस दिन का बहुत अच्छा प्रभाव रहता है।

बाबा की श्रीमत है बच्चे, तुम्हें किसी भी हालत में रोना नहीं है। एक है आँखों का रोना, दूसरा है मन का रोना। अब आँखों के रोने और मन के रोने को तलाक दो। क्या करूँ, कैसे करूँ... कुछ भी करो। यह क्वेश्चन तो है ही माया के। परन्तु बाबा ने बिन्दी दी है। तीन बिन्दी लगाओ। एक बिन्दी- मैं आत्मा हूँ, दूसरी बिन्दी है बाबा और तीसरी बिन्दी ड्रामा- यह तीन बिन्दु लगाने से उदासी खत्म। जब मन में आता यह ऐसा क्यों करता। ऐसा-वैसा सोचा माना उदास हुआ। बाबा कहता बिन्दु लगा दो। बाबा की गृहस्थी अति विशाल है, देखो तो अति बड़ी है न देखो तो बिन्दु है। बाबा बैठा है इस एक शब्द से बिन्दु आ गई। न किसी की महिमा में ऊपर चढ़ो, न किसकी ग्लानि में नीचे गिरो। अपना स्लोगन है- निंदा स्तुति, मान-अपमान, दुःख-सुख, ठंडी-गर्मी, सबमें समान। एकरस स्थिति रहे उसके लिए सदैव एक से सर्व रसों का अनुभव करो। जब सब रस मेरे में भरे होंगे तो एकरस हो जायेंगे।